IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सम्राट अशोक का घर्म–परिर्वतन

डॉ रजनीकांत
एम0ए0, पी–एच0डी0
छोटी बलिया, बेगूसराय।

चक्रवर्ती सम्राट अशोक विश्वप्रसिद्ध एवं शक्तिशाली भारतीय मौर्य राजवंश के महान सम्राट थे। सम्राट अशोक का पूरा नाम देवानांप्रिय अशोक मौर्य था। उनका राजकाल ईसा पूर्व 269 से ईसाा पूर्व 232 प्राचीन भारत में था। उन्होंने अखंड भारत पर राज्य किया। उनका साम्राज्य उत्तर में हिन्दु कुश की श्रेणियों से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी के दक्षिण तथा मैसूर तक तथा पूर्व में बांग्लादेश, पश्चिम में अफगानिस्तान, ईरान तक पहुँच गया था। सम्राट अशोक का साम्राज्य आज का सम्पूर्ण भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, म्यान्मार के अधिकांश भूभाग पर था।

इसमें कोई संदेह नहीं कि सम्राट अशोक अपने पूर्वजों की तरह की ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था। महावंश के अनुसार वह प्रतिदिन 60,000 ब्राह्मणों को भोजन दिया करता था एवं अनेक देवी–देवताओं को भोजन करता था। कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार अशोक के इष्टदेव शिव थे। मौर्य राजसभा में सभी घर्मो के विद्धान विवाद में भाग लेते थे– जैसे ब्राह्मण, दार्शनिक, निग्रंथ, आजिवक, बौद्ध तथा युनानी दार्शनिक। [1] **दीपवंश** के अनुसार अशोक अपनी घार्मिक जिज्ञासा शांत करने के लिए विभिन्न सिद्धातों के व्याख्याताओं को राजसभा में बुलाता था। उन्हें उपहार देकर सम्मानित करता था और साथ ही स्वयं भी विचारार्थ अनेक प्रश्न प्रस्तावित करता था। वह यह जानना चाहता था कि घर्म के किन पंथों में सत्य है। उसे अपने प्रश्नों के जो उत्तर मिले उनसे वह संतुष्ट नही हुआ। एक दिन अपने राजभवन की खिड़की से उसने श्रमण निग्रोध को भिक्षा के लिए जाते देखा और उसके व्यक्तित्व से काफी प्रभावित हुआ। निग्रोध के प्रवचन को सुनकर अशोक ने बौद्ध घर्म अपना लिया। बाद में वह मोग्गलिपुत्त तिस्स के प्रभव में आ गए। एक साधारण बौद्ध होने के बाबजूद अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया। इस युद्ध में हुए नरसंहार ने अशोक की अंतरात्मा को तीव्र आघात पहुँचाया। इसके परिणामस्वरूप अशोक ने विधिवत बौद्ध घर्म ग्रहण कर लिया। एक उपासक के रूप में उसने 10वें वर्ष बोघगया की यात्रा की। विहार यात्रा का स्थान घर्म यात्राओं ने ले लिया। इसके उपरांत वे एक वर्ष संघ में ही रहे। इसके फलस्वरूप वे घर्म के प्रति उत्साहशील हो गये। वे जनता में प्रचार के लिए घर्म संबंधी उपदेश शिलाओं एवं स्तंभों पर उत्कीर्ण करवाए।

अशोक का घम्म

संसार के इतिहास मे अशोंक के महान होने का मुख्य कारण यह है कि उसने निरंतर मानव की नैतिक उन्नति का प्रयास किए। जिन सिद्धांतों के पालन से यह नैतिक उत्थान संभव था, अशोक के लेखों में उन्हें घम्म कहा गया है। घम्म संस्कृत के घर्म का हा प्राकृत रूपांतर है तरंतु अशोक के लिए इस शब्द का विशेष महत्व है। घम्म क्या है? इसका उत्तर अशोक स्वयं दूसरे एवं सातवें स्तंभ लेखों में देते है। वे उन गुणों को गिनाते हैं, जो घम्म का निर्माण करती है। इन्हें इस प्रकार रख सकते है। घम्म–

(1) अल्प पाप है। (2) अत्यधिक कल्याण है। (3) दया है (4) दान है। (5) सत्यवादिता है।

(6) पवित्रता है। (7) मृदुता है। (8) साधुता है

उपरोक्त गुणों को व्यवहार में लाने के लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक है। –

(1) प्राणियों की हत्या न करना।

(2) प्राणियों को क्षति न पहुँचाना।

(3) माता–पिता की सेवा करना।

(4) वृद्धों की सेवा करना।

(5) गरूजनों को सम्मान करना।

(6) मित्रों, परिचितों, ब्राह्मणों तथा श्रमणों के साथ अच्छा व्यवहार करना।

(7) दासों एवं नौकरो के साथ अच्छा बर्ताव करना।

(8) अल्प व्यय करना एवं

(9) अल्प संचय करना।

उपरोक्त बातें घम्म के विधायक पक्ष है। इसके अतिरिक्त घम्म का एक निषेघात्मक पक्ष भी हैं जिसके घम्म का एक निषेघात्मक पक्ष भी है जिसके अंतगर्त कुछ दुर्गुणों की भी गणना की गयी है। इसे अशोक तीसरे स्तंभ लेख में पाप कहते है। ये पाप है– (1) प्रचंडता (2) निष्ठुरता (3) क्रोघ (4) घमंड एवं (5) ईर्ष्या। प्रत्येक मनुष्य को इससे बचना चाहिए।

घम्म के इन सिद्धांतो का अनुशीलन करने से कोई संदेह नही रह जाता कि यह एक सर्वसाधारण घर्म है जिसकी मूलभूत मान्यताएँ सभी संप्रदायों में मान्य है और जो देश–काल की सीमाओं से आबद्ध नही है। किसी प्राखंड या सम्प्रदाय का इससे विरोध नही हो सकता। 12 वें शिलालेख में अशोक ने घर्म की सार–वृद्धि पर जोर दिया है अर्थात् एक धर्म संप्रदाय वाले दूसरे घर्म–संप्रदाय के सिद्धांतों के विषय में जानकारी प्राप्त करें, इससे घर्मसार की वृद्धि होगी। इसमें कोई संदेह नही कि आशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था। सभी बौद्ध ग्रंथ अशोक को बौद्ध घर्म का अनुयायी बताते है। राज्याभिषेक से संबद्ध लघु शिलालेखों में अशोक ने अपने को बुद्धशाक्य कहा है। भाब्रु लघु शिलालेख में अशोक त्रिरत्न– बुद्ध, घम्म और संघ में विश्वास प्रकट करते है। **महावंश** तथा **दीपवंश** के अनुसार उसने उसने **तृतीय बौद्ध–संगीति**[2] बुलाई और मोग्गलिपुत्त तिस्स की सहायता से संघ में अनुशासन और एकता लोने का सफल प्रसास किया। अशोक बौद्ध था, त्रिरत्न में विश्वास करता था। किन्तु जिस घम्म के उपदेश का उसने लोगों में प्रचार किया लंका के इतिहास ग्रंथ **महावंश** में भी इसकी चर्चा है।[3] अशोक बौद्ध था, त्रिरत्न में विश्वास करता था। किन्तु जिस घम्म के उपदेश का उसने लोगों में प्रचार किया वह सर्वसाधारण का घम्म था। यह मानव घम्म था, तभी तो अशोक अपने 13 वें शिलालेख में विदेशों में यूनानी शासकों और देश में साम्राज्य के बाहर दक्षिण के पड़ोसी राज्यों में घम्म विजय का दावा करता है। उक्त शिलालेख के अनसार इन सभी इन सभी देशों में लोग घम्मानुशासन अर्थात् धर्म की शिक्षा सुनते है और घम्म के अनुकूल आचरण करते है।

अशोक ने घम्म–प्रचार के लिए बड़ी लगन और उत्साह से काम किया। अहिंसा के प्रचार के लिए अशोक ने कई कदम उठाए। उसने युद्ध बंद कर दिए और स्वयं को तथा राजकर्मचारियों को मानव मात्र के नैतिक उत्थान में लगाया। जीवों का वध रोकने के लिए अशोक ने प्रथम शिलालेख में विज्ञप्ति जारी की कि किसी यज्ञ के लिए पशुओं का वध न किया जाए। अशोक ने लिखा है कि राजकीय रसोई में पहले जहाँ सैकड़ो हजारों पशु भोजन के लिए मारे जाते थे, वहाँ अब केवल तीन प्राणि दो मोर और एक मृग मारे जाते है और भविष्य में वे भी नही मारे जाएगे। साथ ही अशोक ने यह भी घोषणा की कि ऐसा सामाजिक उत्सव नही होना चाहिए जिनमें अनियंत्रित आमोद–प्रमोद हो, जैसे–सुरापान मांस–भक्षण, मल्लयुद्ध, जानवरों की लड़ाई आदि। अशोक ने अनेक बौद्ध स्थानों की यात्रा की जैसे– बोधगया, लुम्बिनी, निगलीसागर आदि। इन घर्मयात्राओं से अशोक को देश के विभिन्न स्थानों के लोगों के संपर्क में आने का और धर्म तथा शासन के विषय में लोगों के विचार जानने का अवसर मिला।[4]

अपने राज्याभिषेक के 14 वें वर्ष में अशोक ने एक नवीन प्रकार के कर्मचारियों की नियुक्ति की। इन्हें **धम्ममहामात्र** कहा गया है। इन कर्मचारियों का मुख्य काम जनता को धम्म की बातें समझाना, उनमें धम्म के प्रति रूचि पैदा करना था। वे समाज के सभी वर्गो के कल्याण तथा सुख के लिए कार्य करते थे। धम्म प्रचार एवं धम्म विजय के संदर्भ में अशोक के अभिलेखों में कुछ ऐसे विवरण भी मिलते है, जिनसे उसके एवं विदेशों के पारस्परिक संबंधों का आभास मिलता है। अशोक ने जो संपर्क स्थापित किए वे अधिकांशतः दक्षिण एवं पश्चिमी क्षेत्रों में थे और धम्म मिशनों के माध्यम से स्थापित किए थे। इन मिशनों की तुलना आधुनिक सद्भावना मिशनों से की जा सकती है।

अशोक ने धम्मसभाओं की व्यवस्था की जिसमें विमान, हाथी, अग्निस्कंध इत्यादि की झाँकियाँ दिखाई जाती थी एवं जनता में धम्म के प्रति अनुराग पैदा किया जाता था। विहार यात्राएँ जिनमें पशुओं का शिकार राजाओं का मुख्य मनोरंजन था, बंद कर दी गई। इसके स्थान पर अशोक ने धम्म यात्राएँ प्रारंभ की। इन यात्राओं के अवसर पर अशोक ब्राहम्णों एवं श्रमणों को दान देता था वृद्धों का सुवर्ण दान देता था।

संदर्भ–

1. **प्राचीन भारत का इतिहास;** झा, द्विजेन्द्रनारायण एवं श्रीमाली कृष्णमोहन, पृ0 181

2. **बौद्धधर्म और बिहार;** सहृद्य हवलदार त्रिपाठी, पृ0 170–172

3. **बुद्धचरित;** सांकृत्यायन राहुल, भूमिका, पृ0 6

4. **पूर्वोद्धृत पुस्तक;** झा, द्विजेन्द्रनारायण एवं श्रीमाली कृष्णमोहन, पृ0 185–186